Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु का बपतिस्मा

मत्ती ३:१३-१७; मरकुस १:९-११; लूका ३:२१-२३a

खोदाई: यीशु के सभी लोगों के साथ एक ही समय में बपतिस्मा लेने के बारे में क्या महत्वपूर्ण है? उसके बपतिस्मे के समय कौन सी तीन चीजें होती हैं जो इसे दूसरों से अलग बनाती हैं? आपको क्या लगता है कि इन घटनाओं का उसके लिए क्या अर्थ है? अध्याय ३ और ४ के संदर्भ में, आपको क्या लगता है कि मत्ती ३:१७ यीशु के लिए क्या मायने रखता है? यह उसकी सेवकाई के आरंभ होने के चरण को कैसे निर्धारित करता है?

प्रतिबिंब: कैसे यीशु आपके लिए एक “नए आदम” की तरह रहे हैं – आपको जीवन में एक नई शुरुआत दे रहे हैं? प्रभु ने कैसे आपको मसीह में अपने बच्चे के रूप में पुष्टि की है? जब मसीहा आपको बुलाता है, वह आपको आने और मरने के लिए बुलाता है। येशु में विश्वास करने के बाद से, आप किन क्षेत्रों में स्वयं के लिए मर चुके हैं? क्या भगवान को पानी में डुबोया गया था या छिड़का गया था? आप अपनी दैनिक गतिविधियों और विशिष्ट प्राथमिकताओं में क्या परिवर्तन कर सकते हैं ताकि एक ऐसा हृदय तैयार किया जा सके जो उसकी इच्छा से हमारे स्तर तक गिर जाने से दंग रह जाए?

मत्ती कहानी को मसीहा की तैयारी में अगले महत्वपूर्ण बदलाव के समय से शुरू करता है। यदि येशु वास्तव में वादा किया हुआ राजा और इस्राएल का छुड़ानेवाला है, तो उसे अपने पवित्र कार्य के लिए अंतिम तैयारी से गुजरना होगा। चूंकि मिकवेह (अनुष्ठान निमज्जन) को एक आवश्यक भूमिका निभानी चाहिए, मत्ती इस अत्यधिक प्रतीकात्मक घटना का नेतृत्व करने वाले ऐतिहासिक विवरणों को साझा करता है। ईस्वी सन् २९ में, यीशु के वाचा का पुत्र बनने के अठारह से बीस साल बाद, उसका पहला कार्य बपतिस्मा को एक बनाना था एक नए प्रकार के जीवन का प्रतीकात्मक द्वार, जिसके माध्यम से वह सबसे पहले चलने वाला होगा।

अंत में प्रभु के रास्ते अलग हो गए। यूसुफ की मृत्यु के बाद, परिवार के लिए धैर्यपूर्ण, कर्तव्यपरायण सेवा के वे वर्ष अब पूरे हो गए थे, और उसे अपनी प्यारी माँ को छोटे सौतेले भाइयों की देखभाल के लिए छोड़ने की आवश्यकता थी, जिनमें से सबसे बड़े पहले से ही एक जिम्मेदार उम्र में आ चुके थे। . मैरी का साहचर्य अब उनके ज्ञान और चालीस-चालीस वर्षों के अनुभव में कितना परिपक्व है, और उनका बेटा, मजबूत, अभी तक कोमल और विचारशील, एक दूसरे के लिए मायने रखता है। कैसे वह अपने दिल में गुप्त रूप से इच्छा कर सकती थी कि वह घर पर रह सकता है और एक बढ़ई के अपने सामान्य कार्यों के साथ जा सकता है, जबकि उसने नासरत में अपने देशवासियों के बीच

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 2

स्थानीय सभास्थल और व्यक्तिगत मंत्रालय में शिक्षण के अपने शानदार उपहार को जारी रखा। लेकिन यह नहीं होना था।

यीशु का बपतिस्मा उनके निजी जीवन का अंतिम कार्य था, और उनके सार्वजनिक जीवन का पहला कार्य था। यहीं पर पवित्र आत्मा ने आधिकारिक रूप से येशु की सार्वजनिक सेवकाई का अभिषेक किया था, हालाँकि यह आधिकारिक तौर पर तब तक शुरू नहीं होगा जब तक कि यरूशलेम में मंदिर की पहली सफाई नहीं हो जाती (यूहन्ना २:१३-२२)। छः महीने पहले यूहन्ना ने वास्तव में प्रभु की पहचान मसीहा के रूप में की थी। यूहन्ना ने प्रचार की सेवकाई शुरू कर दी थी, यह घोषणा करते हुए कि मसीहा का आगमन बहुत निकट था। लोगों को उसे प्राप्त करने के लिए स्वयं को तैयार करना था। प्रभु के लिए तैयार होने के लिए, यूहन्ना ने तीन सिद्धांत सिखाए: पहला, उन्हें पश्चाताप करने और परमेश्वर के पास वापस आने की आवश्यकता थी। दूसरे, उन्हें इस सन्देश पर विश्वास करने की आवश्यकता थी कि राजा मसीहा और उसका राज्य जल्द ही आएगा। तीसरा, उन्हें यूहन्ना से बपतिस्मा लेकर सार्वजनिक रूप से अपने पश्चाताप और मसीहा और उसके राज्य में विश्वास को सत्यापित करने की आवश्यकता थी।

जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे, तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। यह ढिंढोरे की धूमधाम से घोषित विजयी प्रवेश नहीं था। वह गलील के नासरत से अकेला आया था। नाज़रेथ एक अस्पष्ट गाँव था जिसका ज़िक्र तानाख, तलमुद या पहली सदी के जाने-माने यहूदी इतिहासकार जोसेफस के लेखन में कभी नहीं हुआ। गैलील, लगभग ३० मील चौड़ा और ६० मील लंबा, फिलिस्तीन के तीन प्रभागों का सबसे उत्तरी क्षेत्र था: यहूदिया, सामरिया और गलील।

वह जॉन द्वारा खुले तौर पर बपतिस्मा लेने के लिए जॉर्डन आया था (मत्ती ३:१३; मरकुस १:९; लूका ३:२१a)। यहाँ हमारे पास एक सामान्य नाम वाला एक व्यक्ति है, एक सामान्य शहर से, एक सामान्य अभ्यास में भाग लेने के लिए, और मानवता के साथ एक सामान्य अनुभव साझा करने के लिए। मूल शब्द बापतो का अर्थ है डुबाना या रंगना। ग्रीक साहित्य में इसका उपयोग कपड़े का एक टुकड़ा लेने और रंग बदलने के लिए डाई की एक बाल्टी में डुबाने के लिए किया जाता था; इसलिए, इसकी पहचान बदलने के लिए। इसे पूरी तरह डाई में जाना था। मूल शब्द बाप्टो से, एक दूसरा ग्रीक शब्द, बैप्टिड्ज़ो, जिसका अर्थ है बपतिस्मा देना, या मैं बपतिस्मा देना। एक बार फिर, इसका मतलब पूरी तरह से डूब जाना है, लेकिन इसमें हमेशा पहचान का विचार होता है। मध्य युग तक, जब रोमन कैथोलिक चर्च ने इसे पेश किया, तब तक चर्च को बपतिस्मा के लिए छिड़काव या पानी डालने के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

तनाख में ईश्वर से डरने वालों और धर्मांतरण करने वालों को तब बपतिस्मा दिया गया जब वे यहूदी धर्म के साथ अपनी पहचान बनाना चाहते थे। इसलिए, यह चर्च की प्रथा बनने से बहुत पहले एक यहूदी प्रथा थी जो यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के साथ बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति की पहचान करती है (रोमियों ६:१-

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 3

२३)।

यीशु को परमेश्वर के पास वापस आने की कोई आवश्यकता नहीं थी। फिर भी, उसने इस्राएल के धर्मी लोगों के साथ अपना स्थान ले लिया और यूहन्ना के बपतिस्मा को स्वीकार कर लिया। क्योंकि यूहन्ना यीशु की पापहीनता और ईश्वरत्व के बारे में पूरी तरह से जानता था कि उसने उसे डराने की कोशिश की। अपूर्ण काल, उसने रोकने की कोशिश की, इसका मतलब है कि वह यह कहते हुए उसे रोकने की कोशिश करता रहा: मुझे आप से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है| और क्या तुम मेरे पास आते हो (मत्ती ३:१४)? यह ऐसा था मानो यूहन्ना कह रहा हो, “मैं केवल यहोवा का भविष्यद्वक्ता हूँ और मैं उन सभी लोगों की तरह पापी हूँ जिन्हें मैं बपतिस्मा देता हूँ। लेकिन आप ईश्वर के पुत्र हैं और निष्पाप हैं। तो फिर आप मुझसे बपतिस्मा लेने के लिए क्यों कहते हैं?”

यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा देने का विरोध ठीक इसके विपरीत कारण से किया कि उसने फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा देने का विरोध किया। उन्हें पश्चाताप की बहुत आवश्यकता थी लेकिन वे इसके लिए पूछने को तैयार नहीं थे और उन्होंने इसके होने का कोई सबूत नहीं दिया। इसलिए, यूहन्ना ने उन्हें बपतिस्मा देने से मना कर दिया, और उन्हें सांप का बच्चा कहा (मत्ती ३:७)। यीशु, इसके विपरीत, बपतिस्मा के लिए आया, हालाँकि उसे अकेले पश्चाताप की कोई आवश्यकता नहीं थी। यूहन्ना ने फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा देने से मना कर दिया क्योंकि वे इसके लिए पूरी तरह से अयोग्य थे। अब वह लगभग समान रूप से यीशु को बपतिस्मा देने के लिए अनिच्छुक था, क्योंकि वह इसके योग्य भी था।

यूहन्ना की चिंता को समझना आसान है। उसका बपतिस्मा पाप के अंगीकार और पश्चाताप के लिए था (मत्ती ३:२, ६ और ११), जिसकी स्वयं यूहन्ना को आवश्यकता थी। लेकिन उसने पहचाना कि यीशु मसीहा था और इसलिए उसे पछताने की ज़रूरत नहीं थी। बारह वर्ष की आयु से येशु के पहले रिकॉर्ड किए गए शब्दों में, जब उसने अपने माता-पिता से कहा: क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर [या मेरे पिता के व्यवसाय के बारे में] में होना है (लूका २:४९)? येशु ने उत्तर दिया: अब ऐसा ही रहने दो; सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए ऐसा करना हमारे लिए उचित है। तब यूहन्ना ने सहमति दी (मत्ती ३:१५)। उस अंतिम कार्य के साथ, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई समाप्त हो गई। लेकिन इसके साथ ही उनकी किस्मत पर भी ताला लग गया था।

यीशु ने इस बात से इनकार नहीं किया कि वह यूहन्ना से श्रेष्ठ और निष्पाप था। मुहावरा: चलो अब ऐसा ही हो एक मुहावरा था जिसका अर्थ है कि उनके बपतिस्मा का कार्य, हालांकि उचित प्रतीत नहीं होता, वास्तव में इस विशेष समय के लिए उपयुक्त था। उनका अंतिम संबंध जो भी हो, सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए ऐसा करना हमारे लिए सही कार्रवाई थी। और येशु, अब, पूरे सुसमाचार की तरह, पूरी तरह से प्रभु की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी होगा। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा पूरी होने के लिए, यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा लेना आवश्यक था।

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 4

यदि यीशु निष्पाप था तो उसने स्वयं को बपतिस्मा के अधीन क्यों किया? सात कारण हैं। सबसे पहले, सभी धार्मिकता को पूरा करने के लिए, या स्वयं को धार्मिकता के साथ पहचानने के लिए। विशेष रूप से, वह एक दृश्य तरीके से दिखा रहा था कि वह तोराह की धार्मिकता को पूरा करने जा रहा था। यशायाह ५३:११ यहोवा के दास को धर्मी कहता है, जो बहुतों के पापों को उठा कर धर्मी ठहराएगा।

दूसरा, स्वयं को परमेश्वर के राज्य के साथ पहचानना जो यूहन्ना के प्रचार का उद्देश्य था। यूहन्ना न केवल पश्चाताप का प्रचार कर रहा था (ऐसा कुछ जिसे यीशु को पहचानने की आवश्यकता नहीं थी), लेकिन वह आने वाले राजा और उसके राज्य के बारे में प्रचार कर रहा था।

तीसरा, इस्राएल को ज्ञात किया जाना। इस अवसर पर यीशु को सार्वजनिक रूप से स्वयं मसीहा के रूप में पहचाना जाएगा। पवित्र शास्त्र से परिचित मत्ती के पाठक जानते होंगे कि येशु ने इस्राएल के इतिहास के साथ पहचान करके और इस्राएल की नियति को पूरा करके भविष्यसूचक शास्त्रों को पूरा किया।

चौथा, यीशु ने खुद को गिने जाने के लिए बपतिस्मा के अधीन किया और युहन्ना द्वारा तैयार किए जा रहे यहूदी विश्वासियों के साथ पहचाना गया।

पांचवां, यीशु को पापियों के साथ पहचाने जाने के लिए दुबकी किया गया था। एक पापी के रूप में पहचाने जाने के लिए नहीं, बल्कि पापियों के साथ पहचाने जाने के लिए। परमेश्वर ने उसे, जिसमें कोई पाप नहीं था, हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (दूसरा कुरिन्थियों ५:२१)।

छठा, प्रेरितों के काम १०:३७-३८ में पाए गए अपने मिशन के लिए पबित्र आत्मा द्वारा विशेष अभिषेक प्राप्त करने के लिए। . . आप जानते हैं कि यूहन्ना के बपतिस्मा के बाद गलील से शुरू होकर पूरे यहूदिया प्रांत में क्या हुआ है – कैसे परमेश्वर ने नासरत के यीशु को पवित्र आत्मा और शक्ति के साथ अभिषेक किया, और वह कैसे भलाई करता रहा और उन सभी को चंगा करता रहा जो उसकी शक्ति के अधीन थे। शैतान, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। चूँकि पवित्र आत्मा उनके बपतिस्मा के समय उनके ऊपर उतरा था, और प्रेरितों के काम १०:३७-३८ में जो हुआ उसे जोड़ते हुए, यह स्पष्ट है कि यह तब था जब उन्होंने अपना विशेष अभिषेक प्राप्त किया था।

और अंत में, नेतृत्व के लिए क्या अवसर है। स्वर्ग में पिता के पास अपने स्वर्गारोहण से पहले, वह कहेगा: सारा अधिकार। . . मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो (मत्ती २८:१८-१९)। यीशु हमें कभी भी ऐसा कुछ करने के लिए नहीं कहते हैं जो उन्होंने स्वयं नहीं किया है।

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 5

नई वाचा में पहली बार, त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति मसीह के बपतिस्मे के समय एक साथ उपस्थित होते हैं। ट्रिनिटी का रहस्य हमारे बहुत ही सीमित और सीमित दिमागों की क्षमता से परे है कि हम इसकी पूर्णता को समझ सकें। ट्रिनिटी सुरमा है; अर्थात्, हमें ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर के लिए तीन व्यक्ति हैं और एक ही समय में, कि परमेश्वर एक है और एक दूसरे के विपरीत है, परन्तु दोनों सत्य हैं। बाइबल सिखाती है कि ईश्वरत्व में एक बहुलता है, और यह बहुलता केवल एक ईश्वर की एकता है। साथ ही तीन व्यक्तियों से अधिक और न ही कम है। तानाख से, प्रमाण यह है कि केवल तीन व्यक्तियों को ही परमेश्वर कहा जाता है, और तीन से अधिक व्यक्तियों को कभी एक साथ नहीं देखा जाता है (यशायाह ४२:१, ४८:१२, ६१:१a) दूसरा ६३:७-१४). नई वाचा में ईश्वरत्व के त्रित्व के प्रमाण की तीन प्रमुख पंक्तियाँ हैं।

सबसे पहले, केवल तीन व्यक्तियों को कभी भी परमेश्वर कहा जाता है (यहाँ मत्ती ३:१६-१७, २८:१९; यूहन्ना १४:१६-१७; पहला कुरिन्थियों १२:४-६; दूसरा कुरिन्थियों १३:१४; पहला पतरस १:२)। .

दूसरा, केवल तीन व्यक्तियों में परमेश्वर के गुण हैं: अनन्त (भजन संहिता ९०:२; मीका ५:२; यूहन्ना १:१); सर्वशक्तिमान, या सर्वशक्तिमान (पहला पतरस 1:5; इब्रानियों 1:3; रोमियों 15:19); और सर्वज्ञ, या सर्वज्ञ (यिर्मयाह १७:१०; यूहन्ना १६:३०, २१:१७; प्रकाशितवाक्य २:२३; पहला कुरिन्थियों २:१०-११); सर्वव्यापी, जिसका अर्थ है कि ईश्वर हर जगह है (यिर्मयाह २३:२४; मत्ती १८:२०, २८:२०; भजन संहिता १३९:७-१०)।

तीसरा, केवल तीन ब्यक्तियों परमेश्वर के कार्य करते हैं: सृष्टि और ब्रह्मांड का कार्य (भजन संहिता १०२:२५; यूहन्ना १:३; कुलुस्सियों १:१६; उत्पत्ति १:२; अय्यूब २६:१३ और भजन संहिता १०४:३०) ; मनुष्य की सृष्टि का कार्य (उत्पत्ति २:७; कुलुस्सियों १:१६; अय्यूब ३३:४); और प्रेरणा का कार्य (दूसरा तीमुथियुस ३:१६; पहला पतरस १:१०-११; दूसरा पतरस १:२१)। जैसा कि ब्रह्मांड और मनुष्य के निर्माण के साथ सच था, तीन व्यक्तियों को प्रेरणा के कार्य का श्रेय दिया जाता है, जो कि परमेश्वर का कार्य है।

परमेश्वर पुत्र पानी में खड़े यीशु के व्यक्ति में देखा गया था। जैसे ही यीशु प्रार्थना कर रहा था, और बपतिस्मा लिया, वह तुरंत पानी से बाहर आया (मरकुस १:१०a), जो इंगित करता है कि उसके पास था पानी में सभी तरह से किया गया। यूहन्ना वहाँ बपतिस्मा दे रहा था जहाँ बहुत अधिक पानी था (यूहन्ना ३:२३), जो अनावश्यक होता यदि केवल छिड़काव का उपयोग किया जाता।

उस समय स्वर्ग फटा जा रहा था (मरकुस १:१०b; यहेजकेल १:१ और यशायाह ६४:१)। ज़बरदस्त यूनानी क्रिया का फटा हुआ होना, या विखंडित होना, का अर्थ विभाजित करना या विभाजित करना है। यहीं पर हमें सिज़ोफ्रेनिया, या विभाजित व्यक्तित्व शब्द

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 6

मिलता है। यह अपने लोगों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर के मानवीय अनुभव को तोड़ने के लिए एक रूपक को दर्शाता है (भजन संहिता १८:९ और १६-१९, भजन १४४:५-८; यशायाह ६४:१-५)

और परमेश्वर पवित्र आत्मा उस पर उतरा (ईस, न कि एपी)
शारीरिक रूप में एक कबूतर की तरह (मैथ्यू ३:१६; मार्क १:१०c; ल्यूक ३:२१b-२२a) जैसा कि प्रभु ने वादा किया था (युहन्ना १:३३)). पवित्र आत्मा कबूतर नहीं था, परन्तु कबूतर की तरह उतरा। शास्त्रों में यह एकमात्र समय है जब एक कबूतर को इस तरह दर्शाया गया है। उस दिन के यहूदी दिमाग में कबूतर बलिदान से जुड़ा हुआ था। अमीरों द्वारा बैलों की बलि दी जाती थी, मध्यवर्ग द्वारा मेमनों की बलि दी जाती थी, जबकि गरीब केवल एक कबूतर ही दे सकते थे। परमेश्वर की आत्मा का अवतरण यशायाह की प्रसिद्ध भविष्यवाणियों की याद दिलाता है, जो कहती हैं कि परमेश्वर अपनी आत्मा को अपने चुने हुए सेवक पर स्थापित करेगा (यशायाह ११:२, ४२:१, ४८:१६, ६१:१-२)। आत्मा प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं पर उनकी भविष्यवाणी की सेवकाई के आरम्भ में विशेष प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए उतरी थी। यीशु के ऊपर वह बिना माप के आया। यह कहना नहीं है कि यीशु पहले आत्मा के बिना था, क्योंकि मत्ती ने पहले ही अपने जन्म को पवित्र आत्मा (मत्ती १:१८ और २०) के लिए जिम्मेदार ठहराया है। लेकिन अब जैसे ही आत्मा उस पर उतरी यीशु स्पष्ट रूप से सुसज्जित है और अपने मसीहाई मिशन को पूरा करने के लिए नियुक्त किया गया है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि यीशु के बपतिस्मा ने उनकी दिव्य स्थिति को नहीं बदला। वह अपने बपतिस्मे के समय परमेश्वर का पुत्र नहीं बना। बल्कि, उसके बपतिस्मे से पता चला कि वह परमेश्वर का पुत्र था।

दिलचस्प बात यह है कि रब्बी के साहित्य में पवित्र आत्मा के लिए यह वही प्रतीक है। तलमुद का एक अंश, उत्पत्ति १:२ के सृष्टि वृत्तान्त से निपटने में, कहता है कि, “परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता रहा – जैसे कबूतर अपने बच्चों को छुए बिना मंडराता है” (ट्रैक्टेट हगिगाह १५a)). एक अन्य तालमुदिक अभिव्यक्ति में, पाठ कहता है कि स्वर्ग से एक आवाज ने गवाही दी, “यह मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूं, मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं।”

ट्रिनिटी के तीनों व्यक्तियों ने यीशु के बपतिस्मा में भाग लिया। पुत्र ने पुष्टि की थी कि वह यह कहकर मसीहा था: यह हमारे लिए उचित है कि हम सभी धार्मिकता

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 7

को पूरा करने के लिए ऐसा करें (मत्ती ३:१५), और पवित्र आत्मा ने पुष्टि की थी कि वह अभिषिक्त व्यक्ति था (मत्ती ३) : १६)। और तब परमेश्वर पिता की वाणी स्वर्ग से आई और कहा: तू मेरा पुत्र है (मत्ती ३:१७a; लूका ३:२२a)। रब्बियों ने सिखाया कि जब परमेश्वर स्वर्ग में बोलते हैं, तो “उनकी आवाज़ की बेटी” बैट-कोल, या एक प्रतिध्वनि, पृथ्वी पर सुनाई देती है। भविष्यवक्ताओं के अंतिम के बाद, यह माना जाता था कि भगवान ने लोगों को मार्गदर्शन देना जारी रखने के लिए बैट-कोल प्रदान किया (ट्रैक्टेट योमा 9बी)। कितना दिलचस्प है कि बैट-कोल ने गवाही दी, नबियों के आखिरी के बाद और नई वाचा की स्थापना से पहले, कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। मत्ति के दर्शकों के लिए, यह एक ऐसी आवाज थी जिसे बहुत गंभीरता से लिया जाना चाहिए। कहा जाता है कि भजन 2, नीतिवचन 30, यशायाह ९:६ और अन्य जगहों के अनुसार यहोवा के पास एक पुत्र है। उस समय, मसीहा इस्राएल में आया था और बपतिस्मा के पारंपरिक तरीके से अपनी याजकीय सेवकाई शुरू की थी।

जबकि यह सच है कि सभी विश्वासी, एक अर्थ में, परमेश्वर की संतान हैं (यूहन्ना १:१२b), यीशु एक अनोखे तरीके से है – उसका एक और एकमात्र पुत्र (यूहन्ना १:१८a)। दो अन्य सन्दर्भ भी इस बिंदु पर जोर देते हैं: एक जिसमें आदम को परमेश्वर के पुत्र के रूप में संदर्भित किया गया है (लूका ३:३८), और यह भी: यहोवा ने मुझसे कहा, “तू मेरा पुत्र है; आज मैं तेरा पिता बना हूं” (भजन संहिता २:७)। जब पहले कुरिन्थियों 15:45 के साथ जोड़ा जाता है, जिसमें यीशु और आदम की आगे तुलना की जाती है, तो ये पद हमें दिखाते हैं कि जब हम मसीह और उसकी सेवकाई के बारे में सोचते हैं तो हमें आदम को ध्यान में रखना चाहिए। यह लूका अध्याय 4 में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां शैतान ने येशु को वैसे ही प्रलोभित किया जैसे उसने आदम को प्रलोभित किया।

हमें परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ अपने संबंध के बारे में जानने की आवश्यकता इस कथन में है: मैं किससे प्रेम करता हूँ (मत्ती ३:१७b; लूका ३:२२b)। परमेश्वर पिता यह कहते हुए परमेश्वर पुत्र की पुष्टि करता है, “मैं तुम पर दावा करता हूँ, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मुझे तुम पर गर्व है।” कितना सरल! कितना बुनियादी! संबंधित होने के लिए, प्यार करने के लिए, प्रशंसा करने के लिए! भगवान, हमारे परिवारों और एक दूसरे के साथ हमारे रिश्ते के लिए और कुछ भी जरूरी नहीं है। हम में से प्रत्येक को संबंधित होने की अत्यधिक आवश्यकता है। अगर वह जरूरत पूरी हो जाती है, तो हमारे पास आत्म-पहचान की ताकत होती है। हम जानते हैं कि हम कौन हैं और कोई भी हमसे वह पहचान नहीं ले सकता। लेकिन अगर हमारी जरूरत पूरी नहीं होती है, तो हम खोए हुए और लावारिस आत्माओं के रूप में भटकते हैं।

मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हूं (मत्ती ३:१७c; लूका ३:२२c; यशायाह ४२:१; इफिसियों १:६; कुलुस्सियों १:१३ भी देखें)। प्रभु ने रूपान्तरण के पर्वत पर मसीह के बारे में इन शब्दों को दोहराया (मत्ती १७:५)। वह एक राजा होगा, वह स्वेच्छा से बलिदान होगा, और वह कष्ट उठाएगा। तनाख में कोई भी बलिदान, चाहे कितनी भी सावधानी से चुना

Bi – यीशु का बपतिस्मा मत्ती ३: १३-१७; मरकुस १:९-११; लूका
३:२१२३a | 8

गया हो, वास्तव में कभी भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता था। ऐसा कोई जानवर खोजना संभव नहीं था जिसमें कोई दोष या दोष न हो। इतना ही नहीं, परन्तु उन पशुओं का लहू अधिक से अधिक केवल प्रतीकात्मक था, क्योंकि यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पाप को दूर करे (इब्रानियों १०:४)।

यीशु की सेवकाई में तीन अलग-अलग बार, परमेश्वर पिता ने स्वर्ग से श्रव्य रूप से बात की। पहली बार उसके बपतिस्मा पर था (मत्ती ३:१७; मरकुस १:११; लूका ३:२२b), दूसरी बार उसके रूपान्तरण के समय था (लूका ९:३५), और तीसरी बार विजयी प्रवेश के बाद था और यीशु ने भविष्यवाणी की थी उसकी मृत्यु (यूहन्ना १२:२७-२९)। तो यीशु के पास अब परमेश्वर पिता का दिव्य रूप है और साथ ही साथ पवित्र आत्मा परमेश्वर का दिव्य अधिकार है। क्योंकि यीशु कोई सांसारिक राजा नहीं है, और उसका कोई सांसारिक राज्य नहीं है, केवल परमेश्वर ने उसे ताज पहनाया, जबकि लोग देखते रहे। उन्होंने भी बल्ला-कोल सुना या नहीं यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन सुसमाचार के लेखक सबसे अधिक चिंतित प्रतीत होते हैं कि हमने परमेश्वर की घोषणा के बारे में सुना है।

केवल लूका ही हमें बताता है कि जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ की तब वह स्वयं लगभग तीस वर्ष का था (लूका ३:२३a)। यदि प्रभु का जन्म हेरोदेस (मत्ती २:१-१९; लूका १:५) के शासनकाल में हुआ था, जिसकी मृत्यु ४ ई.पू. में हुई थी, तो यीशु ने वास्तव में अपने तीसवें दशक की शुरुआत में अपनी सेवकाई शुरू की होगी। ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि दाऊद की उम्र का कोई संदर्भ या संकेत मिलता है जब उसने अपना शासन शुरू किया था, तीस साल की उम्र में (दूसरा शमूएल ५:४), और उत्पत्ति ४१:४६ या गिनती ४:३ के संकेत की संभावना तो और भी कम है। यह केवल लूका का एक सामान्य कथन था।

इस बिंदु से, सुसमाचार के पाठकों के पास येशु की सेवकाई के महत्व को समझने में असफल होने का कोई बहाना नहीं था, भले ही उन्हें यह समझने में कितना समय लगा हो कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था (मत्ती १४:३३)। यह इस महत्वपूर्ण प्रकटीकरण का होगा कि यीशु कौन था जो तुरंत पहले परीक्षण का आधार बनेगा जिससे वह जंगल में गुजरेगा। यदि आप ईश्वर के पुत्र हैं। . . और वहां, जैसा कि उसके बपतिस्मे के विवरण में है, यीशु का पुत्रत्व उसके पिता की इच्छा के प्रति उसकी आज्ञाकारिता में प्रकट होगा।

आइए हम हमारे लिए यीशु के बपतिस्मे के आलोक में अपने बपतिस्मे की फिर से जाँच करें। मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नया जीवन जीएं (रोमियों ६:४)। हमने यीशु की मृत्यु में बपतिस्मा लिया। यदि हम उसके साथ मरते हैं, तो हम भी उसके साथ जी उठते हैं, क्षमा किए जाते हैं और पवित्र आत्मा से भर जाते हैं। मसीहा में हमें सब कुछ दिया गया है। हमें केवल, प्रतिदिन, प्रभु के प्रति समर्पण करते रहना चाहिए और अपने जीवन में आत्मा के कार्य को देखना चाहिए।